भारतीय कला में आधुनिकता का स्वरूप

डॉ0 मनीषा सक्सेना

एस,एन,डी,जी,एम पीजी कॉलेज,

गोंडा, उत्तर प्रदेश

यह सत्य है कि कला में आधुनिकता का होना एक शैली नहीं बल्कि उसकी प्रवृत्ति होती है, जो कि प्रत्येक कला में प्रत्यक्ष रूप से होती है। आधुनिक युग में इसका स्वरूप बदल गया है। किसी भी कलाकृति के सृजन में तीन तथ्य मुख्य रूप से उपस्थित रहते हैं, जो सम्पूर्ण रचना को सुनिश्चित करते हैं, जिसमें प्रथम कल्पना, द्वितीय भावों की अभिव्यक्ति एवं अंतिम तकनीक का प्रयोग है।

वास्तव में देखा जाये तो भाव अथवा संवेदना किसी भी कला का आधार होते हैं। अभिव्यक्ति भावों को प्रदर्शित करने का माध्यम है और इस प्रस्तुति को तकनीकी के द्वारा साकार रूप प्रदान किया जाता है। जैसे–2 युग में परिवर्तन आता–जाता है तकनीक के माध्यम से उनकी खोजें व क्षेत्र में विकास होता जाता है और हम आश्वस्त होते जाते हैं कि कला में की जाने वाली समस्त खोजें तकनीक के क्षेत्र में आती हैं व उनमे प्रयुक्त विभिन्न शैलियां व सिद्धान्त मूलतः तकनीक है। ये तकनीक विचारधारा से प्रभावित होते हैं और जब हमारा नयी विचारधारा से परिचय होता है हमें ये आधुनिक लगती है। नयी विचारधारा व नयी तकनीक से जुड़ने के पश्चात् व्यक्ति अनुकूल बनने हेतु सारे विश्व से संवाद करता है व विज्ञान एवं संचार के विभिन्न साधनों का उपयोग करता है। इन सारी बातों के बाद जब वो जीविका के साथ अभिव्यक्ति जोड़ता है तो उसके प्रदर्शन में उसका व्यक्तित्व, कृतित्व व व्यवहार में काल की झलक दिखाई पड़ती है।

कला एक सृजनात्मक अभिव्यक्ति है एवं कलाकार अनेक प्रकार से अपने भावों को व्यक्त कर कलात्मक अभिव्यंजना करता है। यह सत्य है कि आधुनिकता का अर्थ वर्तमान से आंका जाता है परंतु ऐसा नहीं है कि वर्तमान में होने वाला प्रत्येक कार्य आधुनिक है क्योंकि ऐसी अनेक जातियां व स्थान हैं जहां वे परम्परागत चीजों को वर्तमान युग में कर रहे हैं। अतः उनके विचार परम्परागत ही हैं, आधुनिक नहीं।

आधुनिकता की दूसरी शर्त यह है कि कला व विचार सृजनात्मक तो हों, परंतु जिस व्यक्ति अथवा समाज में परंपरागत या रूढ़िवादी ढंग से कार्य अथवा कला को किया जाये वो आधुनिक न हो भले ही वह वर्तमान में घटित हो रहा हो अपितु जो व्यक्ति इन परम्पराओं से अलग एक नई खोज को सोच समझ व अनुभूति के आधार पर परिवर्तन लाने का प्रयास करता है, वही कार्य आधुनिक होता है। कोई मूर्खता पूर्ण विचार अथवा क्रियाकलाप के द्वारा परम्परा की सीमा को लांघ जाये तो उसे पागल अथवा सनकी ही कहा जायेगा क्योंकि उसक विचार समाज को सकारात्मक रूप नहीं दे पा रहे हैं। मौलिकता विचारों का वह पक्ष है जो समाज की वर्तमान स्थिति को देखते हुए कौन सा विचार कितना अधिक हितकारी है यही मौलिकता की पहचान है और इसीलिए मौलिकता आधुनिकता की एक शर्त है।

समय के बदले हुए आयामों ने कला के वर्गीकरण को अधिक कर दिये हैं प्रत्येक क्षेत्र में व्यवसाय परक बुद्धि का प्रयोग होने लगा है यहां तक कि कला मे भी आधुनिकता के नाम पर उसका दोहन हो रहा है।

अवश्य ही इन समीक्षा एवं समालोचनाओं से कुछ अंतर पड़ेगा, क्योंकि प्रत्येक मन में आज इन कार्य प्रवृत्तियों को संचालित करने वाली इस वैज्ञानिक और उपभोक्ता युग की मनोवृत्तियां हट रही हैं।

आधुनिक युग म परिवर्तन के इस दौर में कला भी अब बांधने तथा परंपराओं को दोहराने वाली नहीं रही वह भी वर्गीकृत हो चुकी है। प्रत्येक व्यक्ति अपनी सोच व सुविधा के रहते कला को रंग व अनुभूति प्रदान करता है और इसके साथ ही वह अपने आपको भी प्रदर्शित करता है।

यदि हम भारतीयता को स्वीकार करें तो भारतीय जीवन मूल्यों की आधारभूत मान्यताओं की ओर जाता है यदि भारतीय तथा विदेशी मूल्यों तथा चिन्तनों का आंकलन करें तो रचनात्मक प्रवृत्ति को भौतिक की अपेक्षा आत्मिक रूप से बेहतर समझा जा सकता है। इसी अर्थ की खोज से कला का विकास आधुनिकता के साथ संभव है क्योंकि कला का सम्बन्ध भौतिकता से न होकर आत्मा से है वो वस्तु विशेष नहीं है और न ही वस्तु की तरह उसकी व्याख्या की जा सकती है। कला आत्मा व कल्पना की रचनात्मक इकाई है जिसमें साहित्य व सौन्दर्य दोनों का मिश्रण मिलता है, आज कला में यह बदलाव औद्योगीकरण व विज्ञान की वजह से आया है हम जिसे कला की आधुनिकता कहते हैं उसका अर्थ नयी पुरानी जानकारियों को उनकी उपयोगिता व मानवता की दृष्टि से उपयोग में लाना है यह भी ध्यान में रखना है कि वर्तमान केन्द्र में रहते हुए अतीत व भविष्य को संतुलित करे ताकि परम्पराओं की आधुनिक दृष्टि से संरचना हो सके।

सर जे0 स्वामी नाथन का कथन है कि कलाकार को अपनी सहज मनोवृत्ति व ऐतिहासिक धरोहर से जूझना है, यह जब होगा तभी ''स्वांता सुखाय'' में किया गया कार्य रस एवं आनन्द की वर्षा तथा समाज परक व समष्टि का कारण बनेगा तथा नयी रचना अधिक होगी।

आज हम सभी का कला के प्रति यह सहज तथा निरंतर प्रयास रहना चाहिए कि परंपराओं का आधुनिकता से समायोजन कर कला को उन्नत बनाया जाय ताकि भारतीय संस्कृति का पुर्नगठन होता रहे। ऐसा नहीं है नयी धाराओं ने कला को सृजनात्मक दृष्टिकोण भी दिया है, अनेक संगठनों ने मिलकर कला का नये ढंग से प्रस्तुतिकरण किया है और नया रूप भी प्रस्तुत किया है, जिसमें आधुनिकता व पुरातन कला के दर्शन होते हैं। यह एक सकारात्मक कार्य है, इन सभी कलाकारों का प्रयास इसी दिशा में होते रहना चाहिए।

कला का रूप अनंत है उसमें निरंतर ही नये दृष्टिकोण, नयी विचारधाराओं, प्रगतिशीलता तथा परिवर्तन की आवश्यकता है एवं सदैव ही रहेगी। ध्यान देने योग्य है कि भौतिकता में मौलिकता का अर्थ हमेशा व्यवस्थित रहे ताकि कला में आधुनिकता को सही दिशा मिलती रहे एवं वाद संवाद की स्थिति बनी रहे।